❀ ॐ तत्सत् ❀

श्री परमानन्द माला

खोजेंगे सो पायेंगे निज स्वरूप आनन्द ।
घट घट व्यापक हैं प्रभू पूरण परमानन्द ॥

लेखक व प्रकाशकः—

आनन्द मुनि शास्त्री, बी० ए०,
श्रीभगवद्भक्ति आश्रम, रेवाड़ी, पंजाब

मुद्रकः— भूमानन्द ब्रह्मचारी, भक्ति प्रेस, रेवाड़ी ।

प्रथमवार १०००] सं० २००७। [भेंट =)

❀ ओ३म् तत्सत् ❀

❀ श्री परमानन्द माला ❀

परमानन्द दयालु गुरु सब सुख के भण्डार ।
ऋद्धि सिद्धि आनन्द के दाता परम उदार ॥१॥
परमानन्द प्रकाशघन दिव्य तेज बलधाम ।
बन्दौं तिनके पद कमल सुन्दर सुखद ललाम ॥२॥
परमानन्द परेश प्रभु छाय रहे सब ठौर ।
तिन बिनु कोई है नहीं जग में दूजा और ॥३॥
बाहर भीतर एक सम व्यापक परमानन्द ।
सुमिरन से दुख हरत हैं काटें जम के फन्द ॥४॥
जितने सुख हैं विषय के वे सब दुःख के मूल ।
परमानन्द स्वरूप सुख हरत त्रिविध भव शूल ॥५॥
परमानन्द दयाल हैं तेरे हृदय मँझार ।
आंख ज्ञान की खोल कर अन्तर आप निहार ॥६॥
कानों से सुनते वही नैनों रहे निहार ।
मुख में वे ही बोलते मन में करें विचार ॥७॥
आतम परमातम वही सद्गुरु दीनदयाल ।
पूरण ब्रह्म परेश प्रभु केशव कृष्ण कृपाल ॥८॥
जहां काम ना क्रोध ना लोभ मोह ना शोक ।
दुई भरम अज्ञान ना वह सद्गुरु का लोक ॥९॥
और ज्ञान अज्ञान सब अध्यातम इक ज्ञान ।
परमानन्द दयाल नित करते हैं सो दान ॥१०॥
सत् चित् आनन्द ब्रह्म में नहीं दुःख का लेश ।
परमानन्द कृपायतन छिन में हरें कलेश ॥११॥

सिद्ध मुनी योगीश जेहि धारत हिय में ध्यान ।
सो निज आतम रूप हैं परमानन्द सुजान ॥१२॥
कमल पत्र जैसे रहे जल में सदा अलेप ।
तैसे परमानन्द में कभी नहीं विक्षेप ॥१३॥
दिव्य तेज बल ज्ञानमय दिव्य रूप आकार ।
दिव्य तत्व पावन विमल परमानन्द अपार ॥१४॥
सद्गुरु सौं सांचे रहो तज सब जग की प्रीत ।
सत्य प्रेम के वश सदा यही जो उनकी रीत । १५॥
जब सद्गुरु हिरदय बसे सब दुख गये बिलाय ।
जिधर लखो उस ठौर ही परमानन्द लखाय ॥१६॥
सद्गुरु का यह लक्ष्य है रहो ब्रह्म में लीन ।
तन मन इन्द्रियगण सदा रक्खो निज स्वाधीन ॥१७॥
कोटि कष्ट पल में टरें छिन में सब दुख जांय ।
परमानन्द दयाल जो रञ्चक हृदय समांय ॥१८॥
तिर्गुण में भाला दिया परमानन्द दयाल ।
गुणातीत कूटस्थ नित भक्त जनन प्रतिपाल ॥१९॥
मल विक्षेप आवरण का जहां नहीं लव लेश ।
सोई परमानन्द का पावन विमल प्रदेश । २०॥
राग द्वेष ना कलह ना नाहीं कष्ट कलेश ।
नित्य शान्त निर्मल सदा परमानन्द प्रदेश ॥२१॥
अन्धकार जा में नहीं नहीं कछू दुख लेश ।
परम प्रेम आनन्दमय परमानन्द प्रदेश ॥२२॥

पांच कोष से जो परे जाको रूप न नाम ।
अवर्णनीय इक तत्व है सो सद्गुरु का धाम २३।
निर्विकार निर्लेप जो नित्य शान्त सुख रूप ।
निरावरण निर्विषय शुचि परमानन्द अनूप। २४।
सद्घन चिद्घन ज्ञानघन जहां सकल दुख अन्त ।
परमानन्द दयाल सो सब के प्रियतम कन्त। २५॥
काया कठिन कमान को खैंचेगा जो शूर ।
परमानन्द दयाल का निरखेगा वह नूर ॥२६॥
काम क्रोध मद लोभ अरु मोह भरम अज्ञान ।
इन को हरने में चतुर परमानन्द सुजान ॥२७॥
परमानन्द दयाल जब करें दया की म्हेर ।
सबै असम्भव सम्भवै लगै नहीं कछु देर ॥२८॥
जा घट परमानन्द हैं वहां नहीं दुख द्वन्द ।
आठ पहर साठों घड़ी रहें सदा आनन्द ॥२९॥
लोक भाव से विमल इक परमानन्द प्रभाव ।
जहां न माया का लगै तीन काल में दाव ॥३०॥
रज तम गुण से दूर इक सतो गुणी आनन्द ।
तहां वास कर पाइये पूरण परमानन्द ॥३१॥
चमदृष्टि जब दूर हो समदृष्टि को पाय ।
चहूं ओर तब आप ही परमानन्द लखाय ॥३२॥
सकल आस औ वासना जब मन की मिट जाय ।
नित्य शान्त निर्मल सदा परमानन्द लखाय ॥३३॥

ना काहू का भय जहां ना काहू का खेद ।
परमानन्द दयाल का ऐसा अनुपम भेद ॥३४॥
रोग कटै चिन्ता मिटै फटै चित्त का मैल ।
परमानन्द बिहार में करै जो कोई सैल । ३५॥
सब की आशा छोड़ कर करै एक की आस ।
परमानन्द दयाल का सो सच्चा निज दास ॥३६॥
एक अनोखा बाग है जहां सदा आनन्द ।
तहां सदा क्रीड़ा करें प्रीतम परमानन्द ॥३७॥
एक अटारी अटल है जहां सदा रस रंग ।
नित विहार करते जहां परमानन्द त्रिभंग ॥३८॥
शान्त हृदय शीतलमती रहती है जिस ठांव ।
परमानन्द दयाल का सोई अनुपम गांव ॥३९॥
सत्य चेतना में सदा करते हैं जो बास ।
परमानन्द दयाल का तिनके हृदय निवास ॥४०॥
शान्त दान्त शीतल सदा जिनका मन निष्काम ।
परमानन्द दयाल के बसें सदा वो धाम ॥४१॥
भाव भक्ति जिनके हिये मन में सांचा प्रेम ।
परमानन्द निभावते तिन का योग क्षेम ॥४२॥
तन मन जिन अर्पण किया हरि दर्शन के हेत ।
परमानन्द दयाल गुरु तिनको सर्वस देत ॥४३॥
तन की सुधि बुधि भूल कर मन में करें प्रवेश ।
परमानन्द दयाल के पहुँचेंगे वे देश ॥४४॥

जग सौं दृष्टि फेर कर हरि चरणन में लाय ।
परमानन्द दयाल गुरु करि हैं सदा सहाय ॥४५॥
सुख दुख दोनों में सदा सुरति रहे इक सार ।
परमानन्द दयाल का तब होगा दीदार ॥४६॥
शान्ति सरलता सौम्यता मुदिता विमल विचार ।
परमानन्द दयाल के विविध रूप आकार ॥४७॥
निज हित जीवन छोड़ कर हरि हित जीवन जीव ।
परमानन्द दयाल का घट में अमृत पीव ॥४८॥
यथा लाभ संतोष नित मगन प्रभू के ध्यान ।
परमानंद दयाल दें तिन को पद निर्वान । ४९॥
जिनको आसा दरस की और न दूजी आस ।
परमानंद दयाल हैं नित ही तिनके पास । ५ ॥
बादल में ज्यों नीर है रमा हुवा सब ठांव ।
परमानंद दयाल का सकल चराचर गांव । ५१॥
ऊपर नीचे एक सम बाहर भीतर आप ।
चमक रहा निर्मल सदा परमानंद प्रताप ॥५२॥
तन मन शोधन कीजिये पीजे अमृत सार ।
परमानंद दयाल हैं सब सुख के भण्डार ॥५३॥
लाख कर्म कर पर सदा रख अंतर में ध्यान ।
परमानंद दयाल का पावे पद निर्वान ॥५४॥
स्वारथ तज कीजे सदा परमारथ की बात ।
परमानंद दयानिधी रक्खेंगे कुशलात ॥५५॥

मिथ्यापन को छोड़ कर सांचे मारग चाल ।
रक्खेंगे तेरी सुधी परमानंद दयाल ।।५६।।
रे अज्ञानी जीवड़ा ! कुछ तो सोच विचार ।
कहा सिखावन दे रहे परमानंद उदार ।।५७।।
भव सागर दुस्तर गहन दुर्गम अगम अपार ।
परमानंद दयाल बिन कौन लगावे पार ।।५८।।
ज्ञान ज्योति निर्मल जगे उघरें हृदय कपाट ।
परमानंद दयाल के बड़े निराले ठाठ ।।५९।।
दीप्त अग्नि जिस भांति से जारै सूखा घास ।
परमानद दयाल त्यों करैं पाप का नास ।।६०।।
परमानंद प्रकाश में सदा शान्ति की बाढ ।
बरसे बदली प्रेम की नित सावन आषाढ ।।६१।।
निर्गुण सर्गुण आप ही परमानंद दयाल ।
रखते अपने दास की पल पल सदा संभाल ।।६२।।
परमानंद दयाल सम दाता कोई न और ।
अभय दान दें दीन को सब दानिन सिरमौर ।।६३।।
कोटिन अंधों को दिये दीनबंधु ने नैन ।
ऐसे परमानंद प्रभु दुख मेटन सुख दैन ।।६४।।
मृतकों को जीवन दिया दाता दीनदयाल ।
काटी जम की बेड़ियां परमानंद कृपाल ।।६५।।
एक बार अपना लिया जाको दीनदयाल ।
ताकी पल छिन रात दिन रखते सदा संभाल ।।६६।।

जब घट के पट खोल कर धरे गुरू का ध्यान ।
परमानंद दयाल तब करैं दया का दान ॥६७॥
जड़ चेतन सब में सदा रमते एक समान ।
तदपि शुद्ध मन में करें निर्मल ज्योति प्रदान ॥६८॥
जब घट के पट खोल कर निरखे निज आनंद ।
तब दर्शन देते प्रभू पूरण परमानंद ॥६९॥
जब अंतर में लागि है प्रेम विरह की आग ।
परमानंद दयाल का पावै अचल सुहाग ॥७०॥
रोम रोम जल जायगा तन व्है जै है छार ।
परमानंद दयाल का तब व्है है दीदार ॥७१॥
विरह आग जिनको लगी तिनके विकल शरीर ।
परमानंद दयाल बिन कौन बंधावे धीर ॥७२॥
और कछू भावे नहीं बिन प्रीतम का ध्यान ।
तैल धार सम सुरति नित रहे चरण गलतान ॥७३॥
जग सौं अंधा हो रहे सूझे केवल ध्यान ।
तब झांकी दिखलावते परमानंद सुजान ॥७४॥
कांटों की शैय्या बिछी सोवे बिरला कोय ।
तन मन सारा बिंध गया नैन बहाये रोय ॥७५॥
हाथ शीश धर कर चलै हरि पावन के हेत ।
लाख विघन आड़े पड़ें तौऊ न छांडे खेत ॥७६॥
ना हंसना ना रोवणा ना बोलन का काम ।
अंतर ही रँधता रहे टेक न छांडे नाम ॥७७॥

सूरा सोई जानिये जो जीते यह खेत ।
अपना तन मन जार दे पीय मिलन के हेत ।।७८।।
नैनों से सूझे नहीं कर सौं गह्या न जाय ।
परमानंद दयाल सौं कैसे कहा बसाय ।।७९।।
नाहीं तो मरते बणे जीये जिया न जाय ।
परमानंद दयाल बिन को अस धीर बंधाय ।।८०।।
नहीं इधर ना उधर का बीच रहा लटकाय ।
परमानंद मिलाप बिन पल पल मन भटकाय ।।८१।।
कभी कूक उठती हिये तन हो जाता सुन्न ।
परमानंद दयाल सों लाग रही नित धुन्न ।।८२।।
परमानंद दयाल का लक्ष्य ब्रह्म का ज्ञान ।
जाके उपजे मिटत हैं मोह भरम अज्ञान ।।८३।।
अहं ब्रह्म यह वेद का परम मूल सिद्धांत ।
परमानंद दयाल को यह है मान्य नितांत ।।८४।।
राजस तामस भाव में रहती सदा अशांति ।
शुद्ध सात्विक वृत्ति में नहीं दुख ना भ्रांति ।।८५।।
मन ही ब्रह्म स्वरूप है जो यह होवे शुद्ध ।
परमानंद मिलै नहीं जो मन रहै अशुद्ध ।।८६।।
सत्य लगन औ प्रेम से शीतलता मन छाय ।
निर्मल मन में आप ही परमानंद लखाय ।।८७।।
भक्ति ज्ञान वैराग्य का आश्रय सब सुख सार ।
परमानंद दयाल का इन से हो दीदार ।।८८।।

श्वास श्वास में बस यही धुनी निरंतर होय ।
परमानंद दयाल बिन सगा न दूजा कोय ॥८६॥
पुरुषोत्तम पूरण परम भक्त हृदय उर चंद ।
दीनबंधु करुणायतन श्री हरि परमानंद ॥६०॥
जागृत स्वप्न सुषुप्ति में सदा निरंतर ध्यान ।
एक तुम्हीं आश्रय सदा परमानंद सुजान ॥६१॥
ज्ञान रूप गुरुदेव का हरत सकल दुख जाल ।
अंतर बाहर दीखते परमानंद दयाल ॥६२॥
जैसे जल में उठत हैं नाना भांति तरंग ।
तैसे परमानंद में निर्मल प्रेम उमंग ॥६३॥
जब उर में बासा करें परमानंद दयाल ।
क्षण पल में निज दास का हरैं मोह जंजाल ॥६४॥
अनहोनी होनी करैं होनी को दें टार ।
ऐसे दीनदयाल हैं परमानंद उदार ॥६५॥
अपनी करनी से नहीं बनि आवे कुछ बात ।
परमानंद दयाल हों सदा रहे कुशलात ॥६६॥
पल में भरम मिटावते क्षण में करें निहाल ।
ऐसे पूरण ब्रह्म प्रभू परमानंद दयाल ॥६७॥
जन्म मरण की बेड़ियां क्षण पल में दें काट ।
परमानंद दयाल के अजब निराले ठाट ॥६८॥
नमो नमो करुणानिधि दीनानाथ दयाल ।
पूरण ब्रह्म परेश प्रभु परमानंद कृपाल ॥६९॥

नमो नमो पावन विमल करुणाकर सुखधाम ।
परमानंद कृपायतन सर्वेश्वर अभिराम ॥१००॥
नेति नेति जेहि गावते कह कर चारों वेद ।
परमानंद दयाल सो हरो दुरित भव खेद ॥१०१॥
नारायण करुणानिधे जगदीश्वर कर्तार ।
सर्व रूप विज्ञान घन प्रणवौं बारम्बार ॥१०२॥
आश्रयदाता सुखनिलय जगत्पती जगदीश ।
परमानंद दयाल हरि नमो नमो मम ईश ॥१०३॥
करुणाकर अज्ञान हर शमन सकल दुखद्वन्द ।
नमो नमो गुरुदेव श्री पूरण परमानंद ॥१०४॥
शांति ज्ञान आनंद के परिपूरण भण्डार ।
नमो नमो योगेश श्री परमानंद उदार ॥१०५॥
जय विज्ञान स्वरूप शुचि निर्मल दिव्य प्रभाव ।
अखिल अमंगल हर विभु भव सागर की नाव ॥१०६॥
ओं सच्चिदानंद प्रभु परिपूरण सुखकंद ।
कोटि कोटि पद वंदना श्री हरि परमानंद ॥१०७॥
आगे पीछे से सदा सभी ठौर सब काल ।
नमो नमो गुरुदेव श्री परमानंद दयाल ॥१०८॥
परमानंद दयाल की माला का नित जाप ।
करो प्रेम से सद्गुरु हरैं त्रिविध भव ताप ॥१०९॥

—:×:❀:×:—

* ओ३म् *

❀ गायत्री-प्रार्थना ❀

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ।

ओं= सर्वव्यापक जो सबकी रक्षा करते हैं भगवान्।
भूः= सर्व को सत्ता स्फूर्ति-दाता, सत्यस्वरूप महान्॥
भुवः= दुःख के नाशक, चिन्मय, जिनका उत्तम ज्ञानस्वरूप।
स्वः= सर्वसुखदायक, सुखमय, परम आत्मा, अलख, अनूप॥
तत्= अनन्त हैं, सर्वसार हैं, जिनका कोई पार नहीं।
सवितुः= सर्वोत्पादक, रक्षक, प्रेरक, करे संहार वही॥
वरेण्यम्= है वर्णन करने योग्य जगत् में उनका नाम।
भर्गो= ज्योतिर्मय, पापों के भर्जनकर्ता, पूरणकाम॥
देवस्य= देते हैं सबको दिव्य प्रकाश, शक्ति, आनन्द।
धीमहि= ध्याते हैं हम सब पूर्ण ब्रह्म श्री परमानन्द॥
धियः= हमारी बुद्धि वृत्तियों को वह दीनबन्धु भगवान।
यः= जो ऐसी महिमा वाले परमेश्वर हैं दयानिधान॥
नः= सभी हम जीव मात्र के उर में जिनका वासस्थान।
प्रचोदयात्= वो करें प्रेरणा जिससे हम पायें उत्थान॥

भावार्थः— यत्तेजः सवितुर्देवस्य वरेण्यम् तदुपास्महे।
तत्तेजोऽस्माकं बुद्धीः श्रेयस्करेषु नियोजयेत्॥

आदिदेव का श्रेष्ठ तेज जो उसका हम करते हैं ध्यान।
श्रेय कर्म में सदा हमारी बुद्धि लगावे वह भगवान्॥

—:o:—